# ***एक प्रार्थना***

*परिस्थितियां विषम हों*
*या न हों*
*उनका सहज स्वीकार कम से कम*
*इतना तो साबित करता है*
*प्रभु तुम में आस्था है।*

*सुख और दुख*
*दोनों तुमने दिये*
*तुम्हारा दिया*
*सिर माथे।*

*याचना में जब भी*
*आंखें तुम्हें तकती*
*सिर झुकता, हाथ जुड़ते*
*बस इतना भर मांगती*
*यह आस्था, बनी रहे*

-----X-----

*नदी के स्थिर शान्त जल में*
*आकाश को*
*पृथ्वी से मिलते देखा*
*यह आकाश इतना उज्जवल है*
*बादल भी उस पर*
*लदे–फदे इतरा रहे*

*देखा ओस नहाये*
*पत्तों को*
*सूर्य का स्पर्श*
*पाकर उर्जावान होते*
*मन में प्रश्न पनपा*
*क्या सूर्य के स्पर्श से*
*इनकी सुबह होती*
*या फिर*
*सूर्य के ढ़लने के बाद*
*सारी रात ये पत्ते*
*सुबह सूर्य के प्रथम स्पर्श की*
*प्रतीक्षा में होते*

*सूर्य सब को देता बिना मांगे*
*उसकी उर्जा*
*कभी नहीं चुकती*
*वह न थकता न हारता*
*फिर आदमी*
*क्यों नहीं देता*
*गर देता तो न थकता*
*न हारता*

*देखा*
*एक अकेले फूल को*
*सूर्य के स्पर्श से खिलते निखरते*
*देखा सूर्य की उर्जा का*
*सहज स्वीकार*

*अपने खिलने में*
*वह कितना सुन्दर है*
*कितनी गरिमामयी है*
*उसकी उपास्थिति*
*सबका होकर भी निसंग*
*पृथ्वी पर*
*नितान्त अकेला*
*बांट रहा*
*अपनापन, सौन्दर्य*
*लेने में जितना सहज*
*देने में भी उतना ही सहज*
*आदमी लेता उर्जा सूर्य से*
*पर आपस में लेने से*
*अकसर असहज क्यों*
*क्या लौटाना होगा*
*उसे भयाक्रान्त करता*
*और*
*देने में*
*इतनी कठिनाई ?*
*देने के पहले*
*करता हिसाब*
*क्यों दूं, कितना दूं*
*देना व्यर्थ न हो*
*दूं तो सुपात्र, समर्थ को ही*
*तभी तो वह*
*मय ब्याज लौटा सकेगा*
*देना सिर्फ लेने के लिए*
*देना मात्र देने के लिए*
*क्यों सम्भव नहीं*
*आदमी के लिए*

*आदमी भूल बैठा*
*इस तथ्य को उर्जा वह लेता नित्य सूर्य से*
*लेना पूर्ण हो जाता तभी लेना ठीक है*
*सूर्य से जीवन के लिए*
*पर देना नहीं चाहता*
*यह "नहीं चाहना" देना*
*इसे बौना बना देता*

*जल*
*वायु*
*प्रकाश*
*प्रकृति*
*सब साथ मेरे*
*बेचैन थी*
*किसी के साथ के लिए*
*संग रहते ब्रह्मंड में सब*
*फिर आदमी*
*क्यों चाहता साथ*
*हर पल किसी आदमी का*
*संग*
*साथ लाता अपने*
*अपूर्ण होने का एहसास*
*या भय*
*फिर साथ छूटने का*
*निसंग होना*
*स्वयं में पूर्ण होना*
*किसी को पाने या खोने*
*के भय से*
*मुक्त होना*
*निसंग हो जाना।*
*विवशता में नहीं*
*अपने लिए स्वयं चुनना*
*निसंगता,*
*देती है स्वतंत्रता*
*अपने का जानने, पहचानने और पाने की।*

-----X-----

*चारों ओर*
*जल ही जल*
*ध्वनि*
*मात्र लहरों के उठने, गिरने की*
*हाउसबोट में हूँ*
*सिर्फ अपने साथ*
*लहरों को छू कर आती*
*हवा खेल रही*
*मेरे बालों से*
*महसूस रही हूँ*
*उसका स्पर्श*
*अपने गालों पर,*
*सारे देह पर*
*जैसे कोई प्रिय*
*इस तन–मन की*
*सारी थकान मिटा रहा*
*दुख तिरोहित हो रहा*
*विडम्बनाएं– इस लम्बे जीवन की*
*जल समाधि ले रही*
*मैं पुनर्जीवन पा रही शायद*

*अब तक*
*जो जिया –विगत हुआ*
*इस नीरव एकान्त में*
*मैं जी उठी हूँ*

-----X-----

*नाव*
*पम्पा नदी के किनारे*
*नाविक के गांव*
*पर बंधी*
*लालटेन की रोशनी में*
*बैठी सुन रही*
*झिगुंरों का गान*
*स्वच्छ जल में*
*नारियल के पेड़ों की*
*लम्बी प्रतिछायाएं*
*मौन नदी की*
*लहरें शान्त, स्थिर*
*कभी–कभी*
*गुजरते छोटे नावों*
*के खेने का स्वर*
*मध्यम सी डब–डब–डब*
*पत्तों के बीच से*
*गुजरती हवा की सरसराहट*
*एक अद्‌भुत यात्रा*
*नितान्त अकेले*
*इस नीरव में*
*किसी भी यायावर की*
*कल्पना से भी*
*परे, अपना तिलस्म बुनती*
*दूर झोपड़ियों में*
*टिमटिमाती रोशनी*
*सब किसी और देश से लग रहे*
*कवि, चित्रकार*
*ऐसे ही किसी गांव*
*में ठहरने का*
*सपना बुनता है*
*और मैं यहॉ हूँ*
*ऐसे एक सपने से रूबरू*
*सपने को जीते हुए*

-----X-----

*गिर कर*
*फिर–फिर*
*उठती लहरें*
*निरन्तर*
*समुद्र नहीं थकता*
*आदमी*
*गिर कर*
*उठता है कभी–कभी*
*पर थका हुआ*

*ढलती शाम*
*सूरज को*
*डूबते देखा*
*समुद्र के वक्ष में*
*नदी भी*
*अन्ततः*
*उसमें ही*
*समाती है*
*समुद्र सब को*
*देता आश्रय*
*उसके नाद में*
*छुपा सबका दुख*
*सबका संताप*
*पास बैठ उसके*
*सुना आयी*
*आप–बीती*
*उसमें डूब*
*मैं भी हुई*
*मुक्त*

*यात्रा – एकाकी*
*अपरिचित परिवेश*
*अपने साथ हूँ*
*शान्त, सहज*
*किसी साथ की इच्छा नहीं*
*समझ रही*
*धीरे–धीरे*
*अपना सच*
*सबका सच*
*साथ कोई नहीं चलता*
*जन्म व रक्त के रिश्ते*
*या स्वयं चुने रिश्ते*
*सब अपनी सीमा में बद्ध*
*अब कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं रहा*
*कुछ नहीं बचा*
*समय की छन्नी में*
*सब कुछ छन गया*
*इस हथेली पर*
*एक अणु–सा/अपना आस्तित्व*
*फिर भी शेष*
*उसे तुम्हें अर्पित करती*
*यूं भी वह तो/तुम्हारा ही था*

-----X-----

*इस जीवन में*
*जो हुआ, घटा*
*या जो नहीं हुआ*
*अधटित रहा*
*सब कितना निरर्थक*
*समय के अन्तराल में महत्वहीन होते संबध*
*अब तक का किया*
*कहा, अनकहा*
*कितना अनर्गल*
*इन हथेलियों में छूपा सकूं*
*इतना सुख या दुख भी*
*पास नहीं मेरे*
*या सच कहूं*
*जो सुख सा था लगा/वह सुख नहीं लगता अब*
*दुख भी दुख कहां रहे*
*समय सबकी सूरत बदल गया*
*न संताप, न चिन्ता*
*न भय न अपेक्षाएं*
*मेरी झोली खाली*
*शून्य, मात्र शून्य हूँ*
*शून्य के सागर में*
*डूबने को आतुर*

-----X-----

*डूबता सूरज*
*सुन्दर लगता*
*अपने डूबने में भी*
*अप्रतिम, अद्वितीय*
*क्यों कि*
*वह फिर उगता*
*समुद्र के वक्ष पर*
*गिर कर भी लहरें*
*विलाप नहीं करती*
*क्यो कि वे फिर उठतीं*
*शाश्वत सत्य है*
*गिरना और उठना*
*फिर आदमी क्यों*
*डरता, घबराता*
*गिर कर वह भी*
*उठ सकता*
*गिर कर उठने पर*
*आदमी सूरज में*
*तब्दील हो जाता*
*उठो*
*तुम भी*
*सूरज बनो*

-----X-----

*संसार का मोहपाश छोड़*
*बैठी*
*समुद्र के बगल*
*अच्छा लगता*
*उससे बतियाना*
*या चुपचाप सुनना*
*उसकी बातें*
*उसका सम्मोहन*
*खींचता मुझे*
*इच्छामृत्यु का वरदान*
*मुझे मिला नहीं*
*वरना उसके वक्ष में*
*जल समाधि*
*मृत्यु को भी*
*रूमानी बनाती*

-----X-----

*यात्रा में*
*साथ–साथ*
*चलते रहे तुम निरन्तर*
*सुनती रही तुम्हारी आवाज*
*देखती रही तुम्हारा*
*लहरों को रिझाना*
*कभी रूठ कर वे*
*तुम्हारे वक्ष में छुपती*
*कभी तुम से दूर भागती*
*लहरों को सहेजते, सभांलते*
*स्वयं में उन्हें समेटते*
*तुम फिर भी साथ चलते रहे मेरे*
*किसी दिवास्वपन की भांति*
*तुम्हारे साथ होने का एहसास*
*अब भी होता*
*तुम से दूर*
*वापस लौटी*
*पर मन में झाकती हूं तो*
*तुम्हें अब भी*
*अपने बहुत पास पाती*
*समुद्र*

*स्वयं*
*किसी को*
*नहीं बांधते कभी तुम*
*चुम्बकीय आकर्षण से ओत–प्रोत*
*तुम्हारा सम्मोहन।*
*सब स्वयं ही बंध जाते*
*लौट तो आयी*
*पर तुम्हारा अनहद नाद*
*गुंजता रहता*
*मन में कहीं गहरे*
*तुम्हारे अथाह जल में समर्पण के लिए*
*सब आतुर, उत्सुक*
*तुम्हारे विस्तार में*
*सबके लिए*
*सहज स्वीकार*
*सब तुम्हारे*
*तुम्हें पाकर सार्थक होते*
*तुम दाता, दे–दे कर नहीं थकते*
*सब याचक, ले लेकर और मांगते*
*धीर, गम्भीर तुम बांधते सबको*
*स्वयं मुक्त, अलिप्त*
*तुम से बंधना*
*बंधन– सा नहीं लगता*
*यह बंधन मुक्त करता*

*कभी प्रेम में*
*विवश लहरों को*
*स्वयं में समेटते*
*कभी झूम कर गाते*
*लहरों को चूमते*
*कभी शरारत से भरकर*
*चट्टानों पर जा गिरते*
*कभी खिलखिलाते*
*कभी शान्त हो जाते*
*कभी तट की रेत को भिगोते*
*कभी रूठ कर लौट जाते*
*तुम्हारे निकट बैठ*
*देखती रही तुम्हारा खेल*
*और मुग्ध होती रही*
*तुम्हारे हर रूप पर*
*लेकर लौटी हूँ मैं*
*अपनी काया पर*
*तुम्हारे स्पर्श का दुलार*
*मनम मे रच–बस गया*
*तुम्हारा अनहद नाद*
*तुम से मिल कर*
*तुम्हारी हुई*
*क्या तुम जानते हो*
*समुद्र।*

-----X-----

*जीवन की हर सौगात*
*तुम से बांटना चाहा*
*पर तुम्हारी झोली*
*छोटी पड़ गयी*
*सुख दे सकती*
*तुम को*
*ऐसा लगता था*
*सहज – ले सको*
*तुम से नहीं हुआ*
*दरअसल*
*देना कठिन है*
*पर असम्भव नहीं*
*लेना भी कठिन है बहुत*
*लेना या देना*
*दोनो*
*सहज हो मनुष्य के लिए तो*
*जीवन सुन्दर बन जाता*

-----X-----

*ध्यान  में जाना*
*जीवन– साधना*
*एकान्त से सीखा*
*स्वयं को खोजना, जानना – पहचानना*
*स्वयं का साथ*
*स्वयं को प्रिय*
*मौन से बातें करते–करते*
*स्वयं मौन हो जाता साधक/स्वानुभुति*
*मौन की शक्ति का बोध*
*मौन असीम, अथाह, अछोर, अपार*
*मौन*
*शिव भी*
*मौन सत्य भी*
*मौन सुन्दर भी*
*गहरे और गहरे पैठ*
*डूब, और गहरे डूब*
*खोजा*
*और पया*
*स्वयं को*

-----x-----

*राख के ढेर में*
*दबा–छुपा अंगार हूँ*
*लगभग बुझते–बुझते भी*
*सुलग उठती हूँ*
*गीली लकड़ी– सी जिन्दगी में*
*यकबयक*
*लौट आती हूँ*
*लपटों–सी.*
*ताकि उदास सीले से मौसम में*
*महसूसों तुम*
*गरमाहट मेरी*
*मेरी ऑच तुम तक पहुँचे*
*जब–तब*
*बुझते–बुझते*
*जलती हूँ*
*फिर–फिर*
*बुझ जांउ*
*चुक जांउ*
*मैं वह आग नहीं*

-----X-----

*बीते साल की तरह*
*तुम लौट कर*
*मत आना*
*मेरे अतीत*

*अब मुक्त करो मुझे*
*पल दो पल सही*
*मैं जीना चाहती हूँ*
*तुम्हारे बिना*

*अब कोई रास्ता*
*तुम तक नहीं जाता*
*मुड़ कर मत देखो*
*चलो आगे बढ़ो और आगे, और आगे*
*मुझे भी अपनी राह*
*खोजने दो*
*खोना– पाना चलता रहता*
*जीवन भर*
*हिसाब कभी– कहाँ रख पायी*
*चल पड़ी हूँ*
*कहाँ पहुँचना, इसकी परवाह भी अब कहाँ*

-----X-----

*अनहद नाद–सी*
*तुम्हारी उपस्थिति*
*गूँजती रहती*
*निरन्तर*
*समयातीत*
*कालातीत*
*शून्य से शून्य तक*
*कौर हो तुम।*
*प्रश्नाकुल नहीं हूँ*
*पृथ्वी से आकाश तक*
*पसरा तुम्हारा आस्तित्व*
*मैं हूँ*
*तुम्हारा अंश*

-----X-----

*लांघना मुश्किल है*
*हमारे बीच पसरे*
*सन्नाटे को*
*पर असंभव भी तो नहीं*
*कभी पुकार कर देखना*
*या फिर*
*अपने मौन में ही*
*सुन सको*
*तो सुनना*
*मेरी धड़कन*

*जानती हूँ*
*तुम्हारी आंखों की प्यास*
*गहरी है*
*पर मेरे*
*आंसुओं की नदी भी*
*कभी कहां सूखती है*
*पलकें झपकाओं तो जरा*
*मेरी नदी*
*वहीं कहीं बहती है*

*तुमने सौंपा था*
*चुपचाप, सबसे चुरा*
*एक दहकती दोपहर*
*और में*
*अपनी कविताएं रोप आई थी*
*तुम्हारे धधकते मन में*
*जरा अपने में झांको*
*देखना*
*वहां अग्निफूल खिल रहे होंगे*
*इतनी बांझ भी तो नहीं थीं*
*मेरी कविताएं*

*एक पल*
*जो कभी ठिठकों तो*
*अपने पांव देखना*
*मेरे स्पर्श के गुलमोहर*
*वहां अब भी दहकते होंगे*
*बर्फ–सी सुन्न*

*उंगलियां*
*उन पर रखना कभी*
*और महसूसना*
*मेरा होना*
*सर से पांव तक।*